International Journal of Arts, Humanities, Social Sciences and Commerce
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 2 Issue: 1 January-February 2026
www.ijahssc.com ISSN (Online): 3139-0749

भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक शिक्षाः शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण

अनंत कुमार श्रीवास्तव

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार

Article Info: *(Recieved- 02/11/2025, Accept- 15/12/2026, Published- 06/01/2026)*
DOI- 10.65919/ijahssc.2026.v2i1001

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध बौद्धिक परंपराओं में से एक है, जो केवल ज्ञान के संकलन तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन मूल्यों और नैतिक शिक्षा के गहरे सिद्धांतों से परिपूर्ण है। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में उच्च आदर्शों, सामाजिक उत्तरदायित्व, एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास करना है। भारतीय शिक्षाशास्त्र में नैतिकता को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना गया है, जिसमें वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, गीता, पंचतंत्र एवं हितोपदेश जैसे प्राचीन ग्रंथ नैतिक शिक्षा के मूलभूत स्रोत रहे हैं। गुरुकुल प्रणाली में गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से न केवल शैक्षिक ज्ञान बल्कि नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सत्य, अहिंसा एवं कर्तव्यपरायणता का शिक्षण दिया जाता था। बौद्ध एवं जैन परंपराओं में भी नैतिक शिक्षा का विशेष स्थान था, जहाँ अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह को जीवन का आधार माना गया। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का स्थान कम होता जा रहा है, जिससे समाज में नैतिक पतन, अनुशासनहीनता एवं मूल्यों की गिरावट जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। नई शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने एवं नैतिक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने पर बल दिया है। नीति में भारतीय भाषाओं, योग, नैतिक मूल्यों एवं पारंपरिक ज्ञान के महत्व को स्वीकार किया गया है। डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए पारंपरिक शिक्षण विधियों के साथ आधुनिक तकनीकी साधनों का उपयोग आवश्यक है। नैतिक शिक्षा केवल विद्यालयों तक सीमित न रहकर पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश का भी हिस्सा बननी चाहिए। इसके लिए पाठ्यक्रम में नैतिकता से संबंधित विषयों को प्राथमिकता देना, शिक्षकों की भूमिका को सुदृढ़ बनाना तथा विद्यार्थियों को व्यावहारिक नैतिक प्रशिक्षण देना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से नैतिक शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है, जिससे एक संतुलित एवं मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना संभव होगी।

मुख्य–शब्दः भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा, शिक्षाशास्त्र, गुरु–शिष्य परंपरा, भारतीय दर्शन, सामाजिक मूल्य, शैक्षिक नीति, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, नैतिकता।

परिचय

भारत की ज्ञान परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है, जो केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिक चेतना को भी विकसित करने में सहायक रही है। इस परंपरा का आधार वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण और अन्य शास्त्रों में निहित है, जिनमें ज्ञान के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को भी महत्व दिया गया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या प्राप्ति नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और समाजोपयोगी जीवन की स्थापना करना रहा है। नैतिक शिक्षा भारतीय ज्ञान प्रणाली का अभिन्न अंग रही है, जिसे गुरु–शिष्य परंपरा, गुरुकुल प्रणाली और विभिन्न धार्मिक–दार्शनिक ग्रंथों के माध्यम से संरक्षित और संवर्धित किया गया। भारतीय शिक्षाशास्त्र में नैतिक शिक्षा को केवल शैक्षणिक क्षेत्र तक सीमित न रखकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करने पर बल दिया गया है। यह शिक्षा केवल पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं बल्कि संस्कारों,

आचरण और व्यवहार के माध्यम से ग्रहण की जाती रही है। आधुनिक समय में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की पुनर्स्थापना आवश्यक हो गई है। शिक्षाशास्त्र में नैतिक शिक्षा को एक प्रमुख घटक के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है ताकि समाज में सद्भाव, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को पुनर्जीवित किया जा सके।1

भारत की ज्ञान परंपरा का विकास वैदिक काल से हुआ, जिसमें शिक्षा को जीवन के मूल उद्देश्य के रूप में देखा गया। वेदों में ज्ञान को 'विद्या' के रूप में परिभाषित किया गया, जिसका लक्ष्य केवल सूचनाओं का संकलन न होकर आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान भी था। उपनिषदों में ज्ञान को आत्मबोध और सत्य की खोज के रूप में प्रस्तुत किया गया। महर्षि पतंजलि, महर्षि व्यास और अन्य ऋषियों ने शिक्षा को केवल बुद्धि–विकास का माध्यम न मानकर नैतिक उन्नयन और आत्मसंयम का उपकरण बताया। बौद्ध और जैन परंपराओं में भी नैतिक शिक्षा को विशेष स्थान दिया गया, जिसमें अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह जैसे मूल्यों को अपनाने पर बल दिया गया। गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग रही, जहाँ छात्रों को केवल शास्त्रों का अध्ययन ही नहीं कराया जाता था, बल्कि उन्हें नैतिक आचरण, अनुशासन, सेवा, कर्तव्यपरायणता और समाजोपयोगी जीवन जीने की शिक्षा दी जाती थी। गुरुओं का स्थान केवल शिक्षक के रूप में नहीं, बल्कि जीवनदृष्टा के रूप में होता था, जो शिष्यों के समग्र विकास को सुनिश्चित करते थे। शिक्षा केवल परीक्षाओं तक सीमित न होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिकता के अनुपालन पर केंद्रित थी। मध्यकालीन भारत में भी यह परंपरा जारी रही, जहाँ मदरसों और पाठशालाओं के माध्यम से नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा प्रणाली में मूलभूत परिवर्तन हुए और नैतिक शिक्षा को औपनिवेशिक दृष्टिकोण से देखे जाने लगा। परिणामस्वरूप, पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के केंद्र से हटा दिया गया और केवल बौद्धिक विकास पर अधिक जोर दिया जाने लगा। इससे शिक्षा प्रणाली में नैतिकता का महत्व धीरे–धीरे कम होता गया, जिसका प्रभाव आज के समाज में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

नैतिक शिक्षा का तात्पर्य उन मूल्यों और आदर्शों की शिक्षा से है, जो व्यक्ति को समाजोपयोगी, नैतिकतापूर्ण और अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। नैतिकता केवल आचार संहिता तक सीमित नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यवहारिक दर्शन है जो व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, परोपकार, सहिष्णुता, अनुशासन, करुणा और समानता का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। भारतीय संदर्भ में नैतिक शिक्षा को केवल व्यवहार तक सीमित न रखकर आत्मानुशासन और आत्मज्ञान से भी जोड़ा गया है। महाभारत, रामायण और भगवद गीता जैसे ग्रंथों में नैतिक शिक्षा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। महाभारत में युधिष्ठिर और भीष्म के संवाद, रामायण में श्रीराम का मर्यादित आचरण, और गीता में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया कर्मयोग का संदेश नैतिक शिक्षा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये शिक्षाएँ केवल धार्मिक न होकर व्यावहारिक भी हैं, जो समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में सहायक होती हैं। नैतिक शिक्षा का महत्व वर्तमान समय में और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण सामाजिक असंतुलन, अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। यदि नैतिक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली में पुनः स्थापित किया जाए, तो समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना संभव हो सकती है।2 नई शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में कुछ कदम उठाए हैं, जिसमें भारतीय मूल्यों और संस्कारों को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने का प्रयास किया गया है।

शिक्षाशास्त्र केवल ज्ञान के प्रसार तक सीमित नहीं, बल्कि यह शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया को व्यवस्थित करने और उसके प्रभावों का अध्ययन करने का भी कार्य करता है। शिक्षाशास्त्र में नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता इसलिए बढ़ जाती है, क्योंकि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल सूचना और तकनीकी ज्ञान देना नहीं, बल्कि समाजोपयोगी नागरिकों का निर्माण करना भी है। नैतिक शिक्षा के अभाव में समाज में अनुशासनहीनता, नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, हिंसा और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ जन्म लेती हैं। शिक्षाशास्त्र में नैतिक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक अनिवार्य घटक के रूप में सम्मिलित करने, शिक्षकों को नैतिक आदर्श स्थापित करने के लिए प्रेरित करने, और व्यावहारिक शिक्षण पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता है।3 आज के वैश्विक और डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इसके लिए शिक्षण प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति को भी महत्व देना आवश्यक है। यदि शिक्षाशास्त्र में नैतिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से समाहित किया जाए, तो शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो सकता है और समाज में संतुलन, शांति और सद्भाव स्थापित किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा

भारतीय ज्ञान परंपरा एक व्यापक और समृद्ध बौद्धिक धरोहर है, जो केवल सूचना संचय तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन के समग्र विकास और नैतिक उत्थान को भी लक्षित करती है। यह ज्ञान परंपरा वेदों, उपनिषदों,

पुराणों, बौद्ध और जैन ग्रंथों के माध्यम से संचित हुई, जो मनुष्य को आत्मबोध, सत्य की खोज और नैतिक मूल्यों की दिशा में प्रेरित करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली का मूल आधार केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं था, बल्कि जीवन जीने की कला, समाज में नैतिकता की स्थापना और आत्मानुशासन को भी सम्मिलित करता था। शिक्षा के इस मॉडल में गुरु–शिष्य परंपरा को केंद्र में रखा गया, जहाँ न केवल ज्ञान का आदान–प्रदान होता था, बल्कि नैतिकता और अनुशासन को जीवन का अनिवार्य अंग माना जाता था। भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें वेदों में निहित हैं, जो ज्ञान के प्राचीनतम स्रोत माने जाते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि ज्ञान–विज्ञान, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, गणित और दर्शन के भी प्रमुख आधार रहे हैं। इन ग्रंथों में शिक्षा को आध्यात्मिक और भौतिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना गया है। वेदों में जीवन के चार पुरुषार्थ– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उल्लेख किया गया है, जो शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं।

वेदों के उपरांत उपनिषदों ने ज्ञान की खोज को आत्मबोध और ब्रह्मज्ञान से जोड़ा। उपनिषदों में प्रश्नोत्तर शैली में ज्ञान प्रदान किया जाता था, जिससे जिज्ञासा और तार्किक विचारधारा को बढ़ावा मिलता था। इनमें नैतिक शिक्षा का विशेष स्थान था, जहाँ सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और संयम को महत्वपूर्ण माना गया। शिक्षा को केवल बाह्य ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मज्ञान की प्राप्ति का माध्यम बताया गया। पुराणों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को और अधिक व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया। इन ग्रंथों में ऐतिहासिक घटनाएँ, नैतिक उपदेश और सांस्कृतिक परंपराएँ संकलित की गईं। विशेष रूप से भागवत पुराण, विष्णु पुराण, और शिव पुराण में नैतिक शिक्षा को गहराई से प्रस्तुत किया गया है। इनमें नीति कथाओं और दंतकथाओं के माध्यम से नैतिक मूल्यों की स्थापना की गई, जिससे जनसाधारण भी आसानी से इन शिक्षाओं को आत्मसात कर सके।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य परंपरा को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया, जहाँ गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, संरक्षक और नैतिक आचरण के आदर्श थे। इस परंपरा में शिक्षा केवल ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि विद्यार्थी के चारित्रिक निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। शिष्य को गुरु की सेवा के माध्यम से अनुशासन, धैर्य, सहिष्णुता और कर्तव्यपरायणता की शिक्षा दी जाती थी। यह परंपरा केवल शास्त्रीय अध्ययन तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाती थी। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में गुरु–शिष्य संबंधों के कई उदाहरण मिलते हैं। महाभारत में द्रोणाचार्य और अर्जुन का संबंध एक आदर्श गुरु–शिष्य संबंध माना जाता है, जहाँ अर्जुन को केवल युद्ध कौशल ही नहीं, बल्कि नैतिकता और धर्म का भी बोध कराया गया। इसी प्रकार, रामायण में गुरु वशिष्ठ और श्रीराम का संबंध नैतिक मूल्यों की स्थापना का प्रतीक है, जहाँ श्रीराम को धर्म, कर्तव्य और समाज सेवा की शिक्षा दी गई। इस परंपरा में नैतिक शिक्षा को व्यवहारिक ज्ञान से जोड़कर देखा गया। विद्यार्थी केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त नहीं करते थे, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिकता और संयम का पालन करना सीखते थे। इसी कारण गुरुकुलों में केवल विषयगत शिक्षा नहीं, बल्कि योग, ध्यान, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा भी दी जाती थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध और जैन शिक्षा पद्धतियाँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं, जो नैतिकता और अहिंसा पर विशेष बल देती हैं। गौतम बुद्ध ने शिक्षा को आत्मज्ञान और सामाजिक कल्याण का माध्यम माना, जिसमें नैतिक आचरण, ध्यान और ज्ञान की प्राप्ति को विशेष महत्व दिया गया। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में त्रिशरण (बुद्ध, धर्म और संघ) और अष्टांग मार्ग को नैतिक जीवन का आधार माना गया। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और करुणा जैसे मूल्य शिक्षा का प्रमुख अंग थे। बौद्ध विहारों और मठों में शिक्षा केवल धार्मिक अध्ययन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें तर्कशास्त्र, चिकित्सा, खगोल विज्ञान और भाषा विज्ञान को भी सम्मिलित किया गया। तक्षशिला और नालंदा जैसे शिक्षा केंद्रों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता था। इसी प्रकार, जैन शिक्षा परंपरा में भी नैतिकता को सर्वोपरि रखा गया। महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित पंचमहाव्रत (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) नैतिक शिक्षा के मूलभूत स्तंभ माने गए। जैन आचार्यों ने नैतिक शिक्षा को केवल धर्म का हिस्सा नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास का आधार माना। जैन ग्रंथों में नैतिकता, अनुशासन और संयम को शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग बताया गया, जिससे व्यक्ति आत्मसंयम और समाजोपयोगी जीवन व्यतीत कर सके। बौद्ध और जैन शिक्षा प्रणालियाँ आधुनिक समय में भी नैतिक शिक्षा के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं।6 इन परंपराओं में व्यक्ति के चारित्रिक निर्माण पर अधिक बल दिया जाता था, जो आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है। यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों को पुनः स्थापित किया जाए, तो समाज में नैतिकता और अनुशासन को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली और नैतिक शिक्षा

भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का सदैव एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक एवं चारित्रिक विकास का

भी एक सशक्त साधन रही है। नैतिकता को शिक्षा का अनिवार्य घटक माना गया है, जिससे व्यक्ति में सामाजिक चेतना, अनुशासन, सत्यनिष्ठा और आत्मसंयम का विकास हो सके। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया जाता था, जो गुरुकुल एवं पाठशाला प्रणाली में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। किंतु ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा की प्रकृति में व्यापक परिवर्तन हुआ, जिससे नैतिक शिक्षा की भूमिका कमजोर पड़ गई। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को अधिक प्राथमिकता दी गई है, जबकि नैतिकता और मूल्यों को माध्यमिक स्तर पर रखा गया है। प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी था। गुरुकुलों और पाठशालाओं में विद्यार्थी केवल शास्त्रों का अध्ययन ही नहीं करते थे, बल्कि उन्हें नैतिकता, अनुशासन और समाजोपयोगी आचरण की भी शिक्षा दी जाती थी। गुरुकुल प्रणाली में गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से नैतिक मूल्यों का संचरण किया जाता था, जहाँ गुरु अपने आचरण द्वारा शिष्यों को नैतिकता और आदर्श जीवन का मार्ग दिखाते थे।

गुरुकुलों में विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, त्याग, करुणा और सेवा जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या प्राप्ति नहीं था, बल्कि समाजोपयोगी और चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना भी था। महाभारत, रामायण, उपनिषद और भगवद गीता जैसे ग्रंथ नैतिक शिक्षा के महत्वपूर्ण स्रोत थे, जिनका अध्ययन अनिवार्य किया जाता था। इन ग्रंथों के माध्यम से नैतिकता और जीवन के आदर्श सिद्धांतों को समझाया जाता था, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक दृष्टिकोण विकसित हो सके। बौद्ध और जैन शिक्षा प्रणाली में भी नैतिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया था। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और संयम जैसे मूल्यों को शिक्षा प्रणाली में एक अनिवार्य घटक के रूप में स्वीकार किया गया था। विद्यार्थी केवल विषयों का अध्ययन नहीं करते थे, बल्कि वे ध्यान, योग और आत्मसंयम जैसी विधाओं के माध्यम से नैतिकता और अनुशासन को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते थे। ब्रिटिश शासनकाल में भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन हुआ, जिससे नैतिक शिक्षा की भूमिका कमजोर पड़ गई। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को अपने प्रशासनिक और आर्थिक लाभ के अनुसार पुनर्गठित किया। 1835 में लॉर्ड मैकाले द्वारा प्रस्तुत शिक्षा नीति में पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली को उपेक्षित कर दिया गया और अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया गया। इस शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को गौण कर दिया गया और व्यावसायिक एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी गई। ब्रिटिश शासन के दौरान स्थापित विद्यालयों और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा के स्थान पर अंग्रेज़ी भाषा, विज्ञान और प्रशासनिक कार्यों को अधिक महत्व दिया गया। परिणामस्वरूप, शिक्षा प्रणाली से नैतिक शिक्षा का क्रमशः लोप होने लगा। भारतीय ग्रंथों और नैतिक शिक्षा से संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम से हटा दिया गया, जिससे विद्यार्थियों के नैतिक और चारित्रिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

हालाँकि, इस काल में कई समाज सुधारकों ने नैतिक शिक्षा को पुनर्स्थापित करने के प्रयास किए। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिकता की आवश्यकता पर बल दिया। गांधीजी ने 'नई तालीम' के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया, जबकि टैगोर ने शांतिनिकेतन में नैतिकता पर आधारित एक समग्र शिक्षा प्रणाली की स्थापना की।

आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की स्थिति चिंताजनक है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया गया है, जबकि नैतिक शिक्षा को सीमित कर दिया गया है। अधिकांश विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नैतिक शिक्षा को एक ऐच्छिक विषय के रूप में रखा गया है, जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता और समाजोपयोगी आचरण के विकास में कमी आई है। नई शिक्षा नीति 2020 में नैतिक शिक्षा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस नीति में भारतीय मूल्यों, नैतिकता, अनुशासन और समग्र शिक्षा को महत्व दिया गया है। इसमें भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान और नैतिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया है, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। आज के डिजिटल और वैश्विक युग में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई है। नैतिक मूल्यों के अभाव में समाज में अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, हिंसा और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। यदि शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को पुनः सुदृढ़ किया जाए, तो समाज में नैतिकता, सद्भाव और अनुशासन को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो विद्यार्थियों को केवल पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा न देकर नैतिक आचरण और मूल्यों के प्रति भी जागरूक कर सकते हैं।

नैतिक शिक्षा और आधुनिक चुनौतियाँ

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, अनुशासन और समाजोपयोगी आचरण को विकसित करना भी है। नैतिक शिक्षा व्यक्ति को समाज में उत्तरदायित्व का निर्वहन करने, सदाचार को

अपनाने और अनुशासन का पालन करने की प्रेरणा देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में नैतिक शिक्षा को शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना गया है, जिसे गुरुकुल प्रणाली, धार्मिक ग्रंथों और समाज में व्यावहारिक आचरण के माध्यम से विकसित किया जाता था। किंतु आधुनिक समय में नैतिक शिक्षा कई चुनौतियों का सामना कर रही है। वैश्वीकरण, डिजिटल शिक्षा का प्रभाव और नैतिक मूल्यों के क्षरण के कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की स्थिति कमजोर पड़ गई है। इन चुनौतियों से न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि समाज में भी नैतिक पतन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वैश्वीकरण ने शिक्षा, तकनीक, व्यापार और संस्कृति को एक नए स्तर पर पहुँचाया है, जिससे विश्व भर के देशों के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हुए हैं। हालाँकि, इस प्रक्रिया ने नैतिक मूल्यों के ह्रास को भी जन्म दिया है। पहले की शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, सेवा और संयम पर जोर दिया जाता था, किंतु वैश्वीकरण के कारण प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद और व्यक्तिगत लाभ को अधिक प्राथमिकता मिलने लगी है।10

आधुनिक समाज में नैतिकता का ह्रास कई रूपों में देखा जा सकता है। शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का स्थान धीरे–धीरे कमजोर हो रहा है, जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता, सदाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना कम हो रही है। इसके अलावा, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में सफलता को केवल आर्थिक उपलब्धियों से जोड़कर देखा जाने लगा है, जिससे नैतिकता और मूल्यों का स्थान कम हो गया है। डिजिटल शिक्षा आधुनिक युग की एक प्रमुख उपलब्धि है, जिसने शिक्षण और अधिगम को व्यापक बनाया है। ऑनलाइन संसाधनों, ई–लर्निंग प्लेटफार्मों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से शिक्षा अधिक सुलभ और प्रभावी बनी है। हालाँकि, डिजिटल शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण नैतिक शिक्षा के समायोजन की आवश्यकता भी बढ़ गई है। डिजिटल माध्यमों के असीमित उपयोग से विद्यार्थियों में नैतिकता का विकास बाधित हो सकता है। इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का अनियंत्रित उपयोग, सामाजिक मूल्यों की उपेक्षा और स्क्रीन पर अधिक समय बिताने से पारंपरिक नैतिक शिक्षा की प्रक्रिया कमजोर हो रही है। डिजिटल प्लेटफार्मों पर नैतिक शिक्षा को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए शिक्षकों, माता–पिता और नीति निर्माताओं को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में नैतिकता को समाहित करने के लिए ई–लर्निंग प्लेटफार्मों पर नैतिक शिक्षा से संबंधित सामग्री को अनिवार्य किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, डिजिटल नैतिकता और साइबर अनुशासन जैसे विषयों को शिक्षा प्रणाली में समाविष्ट करना आवश्यक है। यदि डिजिटल शिक्षा को नैतिक शिक्षा के साथ समायोजित किया जाए, तो यह विद्यार्थियों में अनुशासन, सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व की भावना को विकसित कर सकती है।11

नैतिक शिक्षा की कमी के कारण समाज में कई गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। नैतिकता का अभाव भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, हिंसा और अनुशासनहीनता जैसी समस्याओं को जन्म देता है। जब नैतिक शिक्षा शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग नहीं होती, तो समाज में संवेदनशीलता, करुणा और सहिष्णुता का स्थान स्वार्थ, असंवेदनशीलता और भौतिकवादी प्रवृत्तियों से लिया जाता है। नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण समाज में नैतिक पतन की घटनाएँ बढ़ रही हैं। बढ़ते अपराध, घरेलू हिंसा, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता नैतिक शिक्षा की कमी के प्रमुख उदाहरण हैं। यदि नैतिक शिक्षा को पुनः स्थापित नहीं किया गया, तो सामाजिक ताने–बाने में और अधिक गिरावट आ सकती है। शिक्षाशास्त्र में नैतिक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए इसे शिक्षा प्रणाली में पुनः स्थापित करना आवश्यक है। पाठ्यक्रमों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए। शिक्षकों को केवल विषय विशेष में निपुण होने के साथ–साथ नैतिकता के आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, परिवार और समाज को भी नैतिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक शिक्षा का शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में नैतिकता और अनुशासन की स्थापना का एक सशक्त साधन भी है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को एक अनिवार्य घटक के रूप में देखा गया, जहाँ ज्ञान और नैतिकता का समन्वय किया गया था। परंतु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का स्थान धीरे–धीरे कमजोर होता गया, जिससे समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली को पुनः नैतिक मूल्यों से समृद्ध करना अत्यंत आवश्यक हो गया है, जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का नैतिक उत्थान संभव हो सके। भविष्य में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता और अधिक बढ़ने वाली है, क्योंकि समाज में तेजी से हो रहे तकनीकी और सामाजिक परिवर्तन नैतिकता को नई चुनौतियों के समक्ष खड़ा कर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन और डिजिटल युग की नई तकनीकों के कारण समाज में नैतिकता के महत्व को बनाए रखना आवश्यक हो गया है। ऐसे समय में नैतिक शिक्षा को आधुनिक संदर्भ में पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है। भविष्य की शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के साथ समाहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों

को नैतिकता और व्यावसायिक उत्तरदायित्व (म्जीपबंस त्मेचवदेपइपसपजल) के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए, जिससे वे भविष्य में अपने कार्यस्थल और समाज में नैतिकता के सिद्धांतों का पालन कर सकें। इसके अलावा, विभिन्न स्तरों पर नैतिक शिक्षा की प्रभावशीलता को बनाए रखने के लिए नई शिक्षा नीति के अंतर्गत इसे एक अनिवार्य घटक बनाया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा को केवल विद्यालयों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसे पारिवारिक और सामाजिक वातावरण में भी बढ़ावा देना आवश्यक है। माता–पिता को भी अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना चाहिए, जिससे वे अपने जीवन में नैतिकता को आत्मसात कर सकें।

Author's Declaration-

I/We accept full responsibility, jointly and individually, for this article's content, views, analysis, conclusions, and any related errors, plagiarism, copyright, ethical, defamatory, or legal issues, now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall bear no liability. I/We declare no financial, personal, academic, or professional conflict of interest.

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2018). भारतीय शिक्षा दर्शन एवं नैतिकता. प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृष्ठ 45।
2. मिश्रा, एस. (2020). भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 89।
3. तिवारी, के. (2019). नैतिक शिक्षा का शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन. नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, पृष्ठ 112।
4. वर्मा, एस. (2019). भारतीय शिक्षा प्रणाली और नैतिक शिक्षा. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 55।
5. वही, पृष्ठ 56।
6. सक्सेना, पी. (2018). नैतिक शिक्षा के सिद्धांत और प्रयोगात्मक शिक्षण. सागर पब्लिकेशन, भोपाल, पृष्ठ 65।
7. मिश्रा, पी. (2019). आधुनिक शिक्षा प्रणाली और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना. इंडियन एजुकेशन प्रेस, भोपाल, पृष्ठ 100।
8. तिवारी, एस. (2020). ब्रिटिश शासनकाल और भारतीय शिक्षा का परिवर्तन. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृष्ठ 85।
9. सिंह, एम. (2021). वैश्वीकरण और नैतिक शिक्षा का स्थान. प्रकाशन विभाग, दिल्ली, पृष्ठ 48।
10. शुक्ला, आर. (2021). भारतीय शिक्षा प्रणाली और नैतिकता का ह्रास. एजुकेशन प्रेस, दिल्ली, पृष्ठ 145।
11. वही, पृष्ठ 149।

Disclaimer / Publisher's Note: The views, content, and claims expressed in this article are solely the"responsibility of the author(s). The publisher and editors accept no legal liability for any errors,"copyright infringement, or loss or damage arising from its use.

Cite this Article

'***श्रीवास्तव, अ. क.***' (2026), "***भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक शिक्षाः शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण***", International Journal of Arts, Humanities, Social Sciences and Commerce, 2(1), 1–6. https://doi.org/10.65919/ijahssc.2026.v2i1001

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."